वर्ष 3 / अंक 4
जुलाई 2020
Year 3/ No. 4
July
2020

सत्य साहित्य

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका
सत्य साहित्य का यह संस्करण सिर्फ online ही उपलब्ध होगा।

"यही विनती है पल पल छिन
छिन, श्री राम श्री राम,
हो ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥१
होठों पे तुम्हारा नाम रहे,
शुभ सिमरन यह सब याम रहे।
दिन रात यही मेरा काम रहे,
श्री राम श्रीराम ०२॥
चाहे संकटों ने मुझे घेरा हो,
और चारों ओर अन्धेरा हो।
पर चित्त न डग मग मेरा हो,
श्री राम श्रीराम ०॥३॥
चाहे कांटों पर भी चलना हो,
और ज्वाला में भी जलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो,
श्री राम श्री राम०॥४॥
चाहे वैरी सब संसार बने,
मेरा जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मृत्यु गले का हार बने.
श्री राम श्रीराम हो ध्यान
तुम्हारे चरणों में॥" ५।

(परम पूजनीय स्वामी जी महाराज की डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- निर्वाण दिवस : श्रद्धांजलि
- व्यास पूर्णिमा
- गुरु भक्ति
- प्रवचन
- श्री महाराज जी के पत्रों के अंश
- अनुभूतियाँ
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- कैलेंडर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य

श्रद्धांजलि

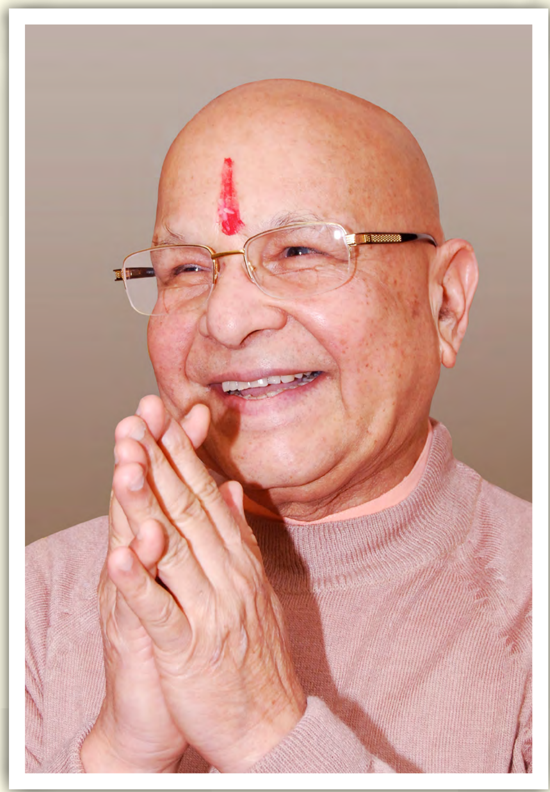

(2 जुलाई 2012)

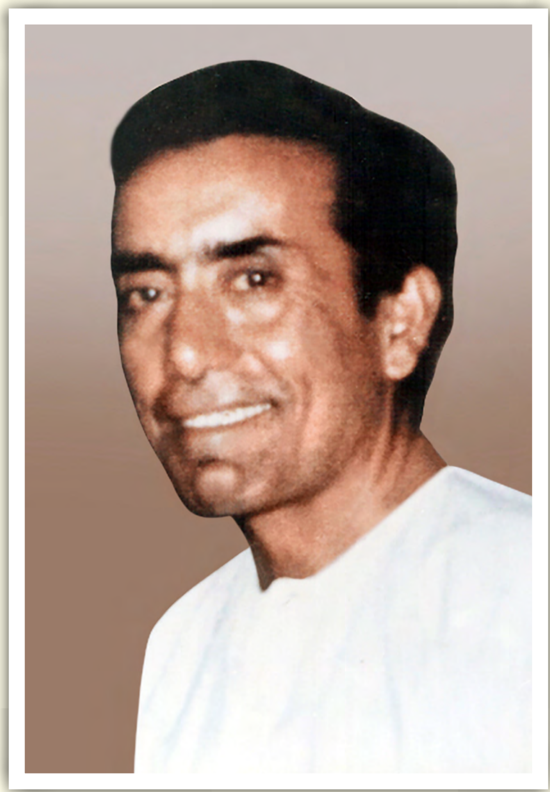

(29 जुलाई 1993)

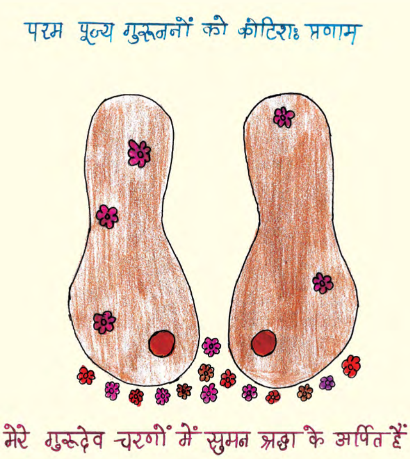

Happy Vyas Purnima to all.
Life must be purposeful, only then
contentment & bliss will accrue.
Loving Jai Jai Ram to all

आप सबको व्यास पूर्णिमा की बधाई!
जीवन उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए – संतोष और परमानंद उसी से उपजेंगे।
सभी को सप्रेम जय जय राम।

'Gurur Brahma, Gurur Vishnu, Gurur Devo Maheshwara,
Guru Saakshaat, Param Brahma, Tasmai Sri Gurave Namah.'

(Guru is Brahma, Guru is Vishnu, Guru is Shiva Himself.
Verily Guru is no other than the highest Brahman. Salutations to the Guru!)

Guru is God in human form. It is a great offence to look upon Gurus as ordinary human beings. So say the scriptures. It is our greatest good fortune when the Guru unexpectedly comes into our life and takes us by the hand and leads us God-wards, from darkness into light. Guru does what even God cannot do Himself. As an act of self-willed benediction, He gives Naam-daan. He takes upon Himself the burden of our sins and completely alters the course of our destiny and yet we remain blissfully unaware. The role of a Guru is beyond comprehension for those with limited intellect like ours. He holds the key to the portals of the sanctuary of God. So let our one aim be to please the Guru. The only way we can do that and hope to repay even an Infinitesimal part of the debt is to have firm faith in our Gurujan's Pravachans and mould our lives accordingly. Let us resolve today to Be Good and Do Good; let from today repeat the Name while hands remain busy in daily duties. This, in essence, is Swami ji Maharaj's Bhakti-maya Karmayoga Sadhana.

Jai Gurudeva! What a simple path you have paved for us. Let the journey be ours and the victory be yours. Jai Gurudeva! Jai Jai Ram! Whatever we do or we don't do, let us never forget to thank God daily for the peerless Gurus He has given us, which the scriptures proclaim is the rarest of the rare privilege. Do not ever think it is the fruit of our past meritorious deeds; it is nothing but the unbounded, unconditional Grace of God. Let us make the most of it. Let us joyously celebrate this greatest day of Vyas Purnima. Let us remember and renew the vow given to our Gurujans and offer flowers of faith and reverence at their Lotus Feet.

(Thoughts of a sadhak) ■

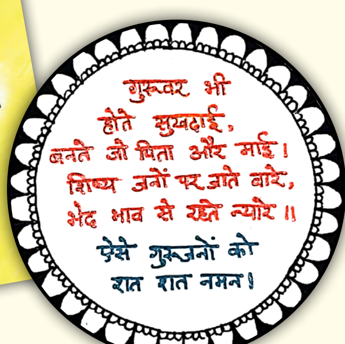

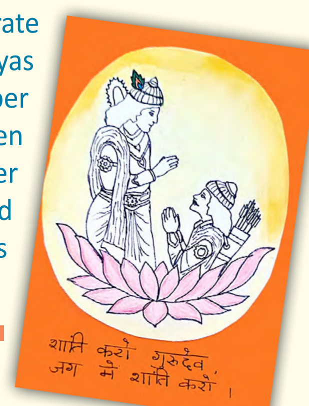

(विभिन्न केन्द्रों से बच्चों द्वारा गुरुजनों को श्रद्धा सुमन)

Guru Bhakti

सत्यानन्द

Ram is Truth. Ram is Omkar (primordial sound). Verily Ram is the highest, formless Brahman. Do Bhakti of Ram with mind totally absorbed in Him, with a yearning heart full of pure love, devotion, fervour and lofty sentiments. Have firm faith in Ram and worship Him with unflagging zeal, unswerving determination, perseverance and one-pointed loyalty. Lovingly chant His Name, sing His glories, have constant remembrance of Him, meditate on Him. These devotional activities are the means of doing Bhakti; and the very means of increasing one's taste and desire for Bhakti.

God is present wherever His pure devotees are gathered in His name to do Bhakti: indeed He is present in the very sentiments of devotion. God is both immanent and transcendent. He dwells within each one of us but those devoid of Bhakti aimlessly drift about here and there in search of Him.

Bhakti is the elixir of life, the true essence of religion. The religion devoid of Bhakti is but a flimsy sand castle, a fake red gem which only looks real. Bhakti indeed is the repository of self-knowledge and the stairway to heaven.

Bhakti is the quintessence of gyana and karma. Without Bhakti all activities, logic, knowledge, discourses, sermons etc. are insipid and meaningless. In Bhakti is inherent the knowledge of the known which the bhakta (knower) unravels by means of worship. Bhaktiyoga is indeed the fulfilment of Gyana and Karmayoga but not conversely. So all the Saints, sages, devotees and pundits practice Bhakti.

Sit in the company of Saints and sing the glories of God. In holy company will rain torrents of love and the river of devotion will swell. One who bathes in this Bhagirathi of Bhakti will be freed from the cycle of birth and death.

Pride, arrogance, self-esteem, all these miserable passions of our ego cannot co-exist with Bhakti just like two swords cannot fit in one scabbard, just like darkness and light cannot dwell in the same place. The gross ego cannot enter the subtle doors of Bhakti just like an elephant cannot pass through a gem hole.

Bhakti does not abide in the cunning heart just like creepers do not climb on a tree whose roots are on fire. The euphoria of Bhakti dies out where there is enmity, quarrel and strife just like fire and water don't mix.

A faithless, doubting, sceptical person cannot have Bhakti nor does he possess the least trace of love. Reasoning, logic, vain argumentation are counter-productive and do not foster Bhakti or love of God. Just as saffron, lotus or camphor cannot grow on barren land so also Bhakti cannot bear fruit in a faithless unbeliever.

All austerity, restraint of the senses and niyamas (preparatory disciplines) are automatically included in Bhakti and hence need not be practiced separately. Compassion, charity, beneficent deeds, service, right thinking all emanate from Bhakti like the many lotuses in a lake. In fact it is only a bhakta who can render true service and reform and uplift the community and nation.

My Lord, I surrender at your Lotus Feet. Grant that I may taste the nectar of Devotion, that I may ever be single-mindedly devoted to you, that I may attain to the state of fearlessness, that I may never become an infidel wretch.

(Based on dohas from Bhakti Prakash, pp. 53-54).

प्रेममयी साधना

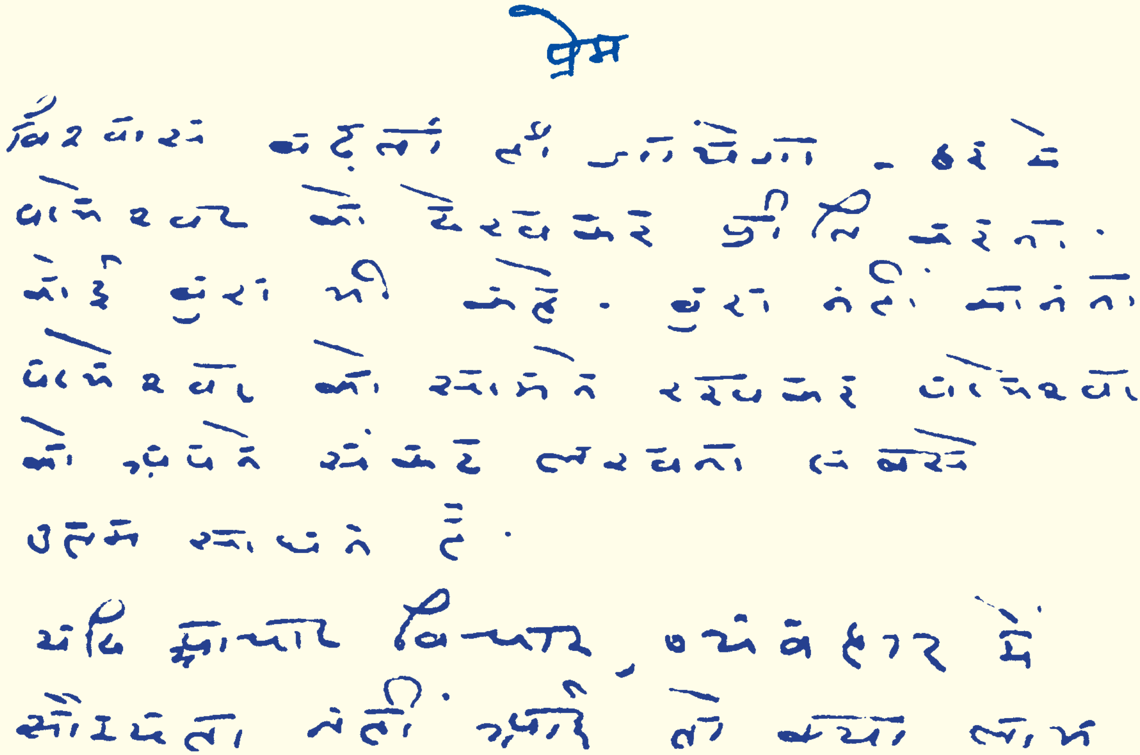

(परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के प्रवचन, 30 मार्च 1969, परम पूजनीय श्री महाराज की डायरी से)

प्रेरक परमात्मा

विश्वामित्र

शबरी का प्रसंग सदा अति सुंदर रहेगा। साधक के सामने, जापक के सामने किस प्रकार कि कठिनाइयाँ आती हैं। हमारे पास छोटी–छोटी कठिनाइयाँ आती हैं तो हम घबरा जाते हैं, बहक जाते हैं। इधर से आसरा ढूँढते हैं, उधर से आसरा ढूँढते हैं। शबरी बेचारी उस निर्जन वन में क्या करे ? ऐसों को परमात्मा आसरा देता है। जो इधर–उधर आसरा ढूँढते फिरते हैं, परमात्मा उन्हें आसरा नहीं देता। परमात्मा कहता है, "छिः, जा! तू मेरे आसरे के योग्य नहीं है। करती होंगी जाप, करते होंगे जाप पर मेरे सहारे के योग्य नहीं हो आप। मेरे सहारे के योग्य वही है जिसे केवल मेरा सहारा चाहिए।" शबरी को वहाँ और कोई सहारा नहीं है। प्रेरक परमात्मा उसके भीतर बैठा हुआ है। जो कुछ शबरी के पास है, परमात्मा कृपा से वह सब कुछ हमारे पास भी है। हमारे संस्कार अच्छे हैं तभी तो स्वामी जी जैसे गुरु महाराज मिले हुए हैं। हमारे संस्कार गंदे नहीं हैं। हमारे संस्कार शबरी जैसे न सही, उससे कुछ कम भी नहीं हैं। उसे अभी तक गुरु महाराज नहीं मिले हैं

लेकिन हमें मिले हुए हैं। हमें स्वामी जी महाराज जैसे महान संत, सद्‌गुरु मिले हुए हैं। यह कोई पिछले संस्कारों के ही हिसाब–किताब होंगे। यह परमात्मा कृपा तो है ही। यह कोई कम उपलब्धि नहीं है। इसमें कोई शक नहीं है। जैसा प्रेरक परमात्मा शबरी के अंदर बैठा हुआ है वैसा हमारे अंदर भी बैठा हुआ है। यह अलग बात है कि we have no connection with Him-शबरी का connection है। कितने plus points? शबरी अपनी सफलता की कुंजी समझा रही है। कहाँ ढूँढते फिरोगे गुरु को? कहाँ ढूँढते फिरोगे मार्गदर्शकों को? जो भीतर बैठा है उससे क्यूँ नहीं contact करते? He is ever ready to help you- हर वक्त मार्गदर्शन को तैयार है। Why don't you contact him? शबरी अपने जीवन से बताती है कि वह परमात्मा भीतर विराजमान है, वह प्रेरक है, वह बताता है कि आगे क्या करना है।

ऐसी बुद्धि का क्या करना जो हमें बुद्धिदाता से दूर करके रखे?

शबरी जंगल मे छुप कर दिन कहीं इधर–उधर गुज़ार लेती है। कहीं कोई देख न ले कि नारी इस आश्रम के आसपास है। अभी भी ऐसे आश्रम हैं जहाँ नारी को प्रवेश नहीं मिलता है। उत्तरकाशी में, बहुत वर्ष पहले, मैं एक आश्रम में रहा करता था वहाँ किसी नारी को आने की इजाज़त नहीं थी। अभी भी वह परम्परा इसी प्रकार निभाई जा रही है। शबरी के पास चारा क्या था? उसके पास एक ही चारा था कि दिन भर कहीं छुप कर एकांत स्थान पर अपना समय व्यतीत करे और रात में चोरी–चोरी इस आश्रम में प्रवेश करे। ऐसा ही किया उसने। क्या आप कोई ढंग सोच सकते हो? है क्या आपके पास कोई ढंग जो आपको इससे बेहतर लगे? आप पढ़े–लिखे आदमी हैं, बहुत ज़्यादा सोच सकते हैं पर शबरी के पास और कोई ढंग नहीं था। क्या करे?

यह पढ़ाई और उच्च दिमाग हमारा पीछा नहीं छोड़ता। So called intelligence हमारा पीछा नहीं छोड़ती। बीच में बहुत बड़ी दीवार, बड़ी impervious प्रबल दीवार खड़ी करके रखे, ऐसी बुद्धि का क्या करना? ऐसी बुद्धि का क्या करना जो हमें बुद्धिदाता से दूर करके रखे? नहीं चाहिए। परमेश्वर कृपा है शबरी के पास कि ऐसा कोई बैरियर नहीं है। वह ठोक बजाकर कहती है कि जिस उपासना के साथ वासना जुड़ी होगी, शरीर और शरीर से संबन्धित समस्याएँ उपासक को उपासक न रखकर भिखारी बना देती हैं। अंत में वह भिखारी ही मरता है ऐसा शबरी समझाती है। उपासना के साथ जिसने समस्याएँ जोड़ी हुई हैं, इच्छाएँ–कामनाएँ जोड़ी हुई हैं, वह तो इसी प्रकार है जैसे मेरे जैसा व्यक्ति जो बैठा है गंगा जी के किनारे, आगे भिक्षा का पात्र रखकर, कपड़ा बिछाकर उस व्यक्ति का माला पर उतना ध्यान नहीं जितना कपड़े पर। कपड़े पर कितने पैसे पड़े हैं? भिक्षा–पात्र अभी भरा है या नहीं? हमारी हालत भी बिल्कुल इसी प्रकार की है, उपासना करते हुए भी भिखारी और फिर भिखारी ही मरते हैं। उपासक बनकर नहीं, साधक बनकर नहीं, जैसा कि होना चाहिए।

कमाल के गुरुजन हैं मेरे! कमाल की उनकी साधना पद्धति, कमाल का राम मंत्र! इस संसार में भले कोई व्यक्ति राम से संबन्धित है या नहीं, राम–नाम के विरोध में कोई कुछ नहीं कह सकता। राम के विरोध में कह सकते होंगे लोग, लेकिन जिस 'राम–नाम' के आप उपासक हो, उसके विरोध में बच्चे से लेकर बूढ़े तक, युगों–युगांतर तक कभी किसी ने कुछ नहीं कहा। हमारे लिए गुरु क्या है? हमारे लिए तो काम रुके हुए हैं तो गुरु महाराज। किरायदार मकान खाली नहीं कर रहा है, किरायदार के साथ समस्याएँ हैं, kidney की problem हो गई है, तो इन चीजों की एंट्री करवाने के लिए, अपनी और अपनों की समस्याओं के लिए गुरु! हमारे लिए गुरु मात्र इसी योग्य है, शबरी के लिए नहीं। ऐसे सिलसिलों में, गुरु अपनी भूमिका को बदलता नहीं है। आप शिष्य अपना काम जानो, गुरु अपना काम भूलता नहीं है। वह समझता है कि मेरा काम उन्हें सांसारिक सुख देना नहीं है। वह हँस देता है, ठीक है, परमात्मा की इच्छा होगी तो किसी को रोग दिया है। गुरु ने पीठ पर हाथ लगा दिया, पुचकार दिया, "शाबाश, सब ठीक हो जाएगा" पर भीतर से बहुत पक्का है वह। भीतर से देता है वही जिसमें कल्याण है शिष्य का, न कि वह जिससे सांसारिक सुख। गुरु अपनी भूमिका को नहीं भूलता अन्यथा परमात्मा उससे उसका गुरुत्व छीन लेगा। तुझे लोगों को सांसारिक सुख देने के लिए गुरु नहीं बनाया हुआ है। तुझे संत बनाया है, गुरु बनाया हुआ है इसलिए कि हर एक

के कल्याण के लिए साधनारत रह, चेष्टारत रह। गुरु यही करता है। शिष्य अपनी करनी भुगतेगा, गुरु को अपनी करनी भुगतनी है। शबरी आगे समझाती है, कहती है कि उसे गुरुमंत्र मिल गया है। उसने सत्संग में बैठना शुरू कर दिया है। उसने नाम की उपासना करनी शुरू कर दी है। नाम की उपासना, राम–नाम की उपासना के लिए शबरी कहती है कि उसे पूरा बोध है कि राम–नाम के उपासक को किसी अन्य उपासना का आश्रय लेने की आवश्यकता नहीं है। राम–नाम की उपासना पर्याप्त है। उसे जगह–जगह पर जाकर मत्थे टेकने और आशीर्वाद लेने की आवश्यकता नहीं है। यदि साधक किसी और का आश्रय लेता है तो यही कहना होगा कि उसे अपनी उपासना में शंकाएँ हैं।

शंका और अविश्वास सबसे बड़ी बाधा है नाम की उपासना में। यह परमात्मा का नाम बहुत possessive है। जैसे, कोई पत्नी possessive होती है या पति possessive होता है। नहीं पसंद करती कि उसका पति किसी और को देखे, इसे possessive कहा जाता है। ठीक इसी तरह नाम भी अत्याधिक possessive है। नाम की उपासना कहती है, "मैं परमात्मा से भी बड़ी हूँ, कोई कहे, कोई challenge करे मुझे! मैं सब कुछ देने में समर्थ फिर मुझे छोड़कर किसी दूसरी उपासना पद्धति, किसी दूसरे साधन का आश्रय लेना मेरे प्रति गहरा अपराध है।" आप गाते हो न, 'राम से बड़ा राम का नाम'! क्यूँ गाते हो? मानो, lip service है और अंदर इस बात का बिल्कुल विश्वास नहीं है। वह कहती है, "जब मैं प्रकट हूँ आपके हृदय में तो फिर आपका किसी दूसरे का आश्रय लेना मानो मेरे प्रति आपको विश्वास नहीं है। तार टूट जाती है।"

अंतिम बात करने से पहले शबरी समझाती है हम जापकों को। हमारा जाप मात्र रटन नहीं होना चाहिए। मैं भी जाप करती हूँ, आप सब भी जाप करते हैं। शबरी कहती है, "मैं राम–नाम के माध्यम से राम को पुकारती हूँ, मात्र रटती नहीं हूँ राम राम राम राम। मेरा राम शब्द बोलना मानो राम को पुकारना, आवाज़ लगा रही हूँ उसे।" कितना अन्तर है इन छोटी–छोटी बातों में! कितनी महत्वपूर्ण हैं ये बातें। शबरी बता रही है कि जब मैं राम बोलती हूँ, मात्र बोलती नहीं हूँ मैं राम को पुकारती हूँ, बुलाती हूँ जैसे यशोदा बुलाती है कान्हा को, तो वे तत्काल आकर हाथ जोड़कर खड़े हो जाते हैं। कहते हैं कहो मैया, क्यों याद कर रही हो मुझे? क्यों पुकारा है मुझे? क्या काम है मेरे साथ? यदि यशोदा के लिए कान्हा आ सकते हैं तो राम, एक राम–नाम के जापक के लिए क्यों नहीं आ सकते? कोई कठोर नहीं हैं राम। इससे जुड़ी और बात कहती है शबरी कि आपकी पुकार में इतना बल होना चाहिए कि ये पुकार राम तक पहुँचे। क्या बातें हैं माँ शबरी की! राम राम मैं भी बोलती हूँ जैसे आप सब बोलते हैं लेकिन मैं मात्र बोलती नहीं हूँ, राम को पुकारती हूँ। आ! इधर मेरे राम मेरे पास। हृदय से बुलाती हूँ उसे। हर साधक की ये पुकार इतनी प्रबल होनी चाहिए, इतना बल होना चाहिए कि आपकी पुकार उसे सुनाई दे। उसके कान बहुत पतले हैं, कहते हैं इतने पतले हैं कि चींटी यदि अपने पाँव में घुँघरू डालकर नाचना शुरू करे तो वह भी प्रभु को सुनाई देते हैं। स्पष्ट है, हमारी पुकार में वह आर्तता नहीं, वह बल नहीं जो राम के कानों तक पहुँच सके। जो राम को ऊठक–बैठक करवाए।

"क्या हो रहा है आपको?"

"अरे! कोई याद कर रहा है मुझे। कोई पुकार रहा है मुझे।"

"कोई काम होगा।"

"न!", राम कहते हैं। "कोई काम नहीं है।

सामान्यतः कोई काम नहीं है राम कहते हैं। मैं कहता हूँ जिसके लिए राम कहते हैं कि अरे! कोई काम नहीं है मुझसे, प्रेम से बुला रहा है तर गया वह! जिसे परमात्मा से कोई काम नहीं है परमात्मा उसका युगों–युगांतर तक ऋणी रहते हैं। परमात्मा कहता है, "वत्स तेरा ऋण मैं कभी नहीं चुका सकता।"

माँ शबरी के अंदर परमात्मा के प्रति, इसी प्रकार के भाव भरे हुए हैं। परमात्मा की कृपा है उसके ऊपर कि उसकी कोई सांसारिक समस्या नहीं है। शबरी ने सांसारिक समस्याओं को सुलझाने के लिए अपने गुरु महाराज महर्षि मतंग का कभी प्रयोग नहीं किया। उन्होंने अपने गुरु महाराज को कभी नहीं कहा कि मैं बूढ़ी हूँ तो कुछ देर के लिए जवान कर दिया जाए। रोग

तो उस पर भी आए होंगे, रोगी तो वह भी होती होगी। नहीं मालूम कि महर्षि मतंग के पास उपचार के लिए कोई दवाइयाँ रखी होंगी कि मेरी शिष्या बीमार होगी तो उसको दूँगा। सब परमेश्वर के सहारे चला करता था और वही ठीक है। शबरी ने दीक्षा ले ली है और राम–राम जपना शुरू कर दिया है। सत्संग में बैठने की उसे इजाज़त मिल गई है, बैठती है। सब कुछ बहुत सुंदर चल रहा है। शबरी का विश्वास है कि राम–नाम अपने आप में सम्पूर्ण है, पूर्ण है, पर्याप्त है। नाम की उपासना के प्रति उसका विश्वास इतना सुदृढ़ है कि राम–नाम की उपासना के साथ उसे किसी और उपासना पद्धति को जोड़ने की आवश्यकता नहीं। इसी भाव–चाव से और इसी विश्वास से वह राम–नाम की उपासना करती है। शबरी अपने जीवन का यह रहस्य हम सबको बता रही है।

जो विनम्र नहीं हो सका वह न गुरु से कुछ पाएगा और न परमात्मा से कभी कुछ पाएगा। जिसने झुकना नहीं सीखा वह इन दोनों में से कभी कुछ नहीं पा सकेगा।

यदि आप चाहते हो कि नाम कि उपासना करते–करते आपको सफलता मिले तो आपको इन बातों का ध्यान रखना चाहिए। शबरी के अंदर किसी प्रकार का बड़प्पन आया हो इसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। उसने हमेशा अपने–आप को कमतर ही माना। कितना विनम्र जीवन उसका व्यतीत हुआ होगा और फिर पाने वाला तो विनम्र ही पाता है।

जो विनम्र नहीं हो सका वह न गुरु से कुछ पाएगा और न परमात्मा से कभी कुछ पाएगा। जिसने झुकना नहीं सीखा वह इन दोनों में से कभी कुछ नहीं पा सकेगा। शबरी को झुकना बहुत अच्छी तरह से आता है, बनावटी नहीं। हमारे अंदर तो बहुत बनावट आ गई हुई है। हमारा जीवन बनावटी जीवन है। जहाँ बनावट आती है वहाँ फिर सजावट की भी आवश्यकता पड़ती है। यदि आपने मुख पर कुछ नहीं लगाया तो पसीना आने पर मुख रुमाल से साफ़ कर लेते हैं और यदि लगाया होता है तो इस प्रकार से सफाई करनी पड़ती है ताकि जो लगाया है वह उतर न जाए। जहाँ बनावट होगी वहाँ सजावट भी होगी, जहाँ सजावट होगी वहाँ मिलावट भी होगी, जहाँ मिलावट हो वहाँ गिरावट न हो, यह कभी हो नहीं सकता। हम ऐसी स्थिति पर ही हैं। हमारे जीवन में बनावट बहुत आ गई हुई है। शबरी के जीवन में सरलता थी, निष्कपटता थी, कपट नहीं था, कुटिलता नहीं थी। अनेक सारे गुण थे उस देवी के अंदर इसलिए सब कुछ पा गई। आज मतंग ऋषि ने इतना ही कहा है,"बिटिया, मेरे जाने का समय आ गया है। मैं बिना राम दर्शन जा रहा हूँ।" गुरु महाराज कह रहे हैं,"शबरी मैं बिना दर्शन जा रहा हूँ पर तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ कि तुम्हें राम दर्शन होंगे। इसी कुटिया में तेरे पास राम आएँगे।" बस गुरु शब्दों पर अक्षरशः विश्वास कर के तो शबरी की असली साधना का शुभारंभ होता है। इससे पहले तो शबरी की तैयारी थी। आज गुरु महाराज के शब्दों पर अक्षरशः विश्वास करके तो प्रतीक्षा रूपी साधना का शुभारंभ हुआ है। वास्तविक साधना, तपोमयी साधना। प्रतीक्षा अपने–आप में बहुत बड़ी साधना है, क्या आनंद है प्रतीक्षा में! मिलन में वह आनंद होगा यह वह जाने जिनको मिलन प्राप्त हुआ है लेकिन प्रतीक्षा में जो आनंद है वह भी कोई कम आनंद नहीं है। किसी उर्दू के कवि की पंक्तियाँ याद आती हैं:

''न वायदा न यकीन न आने की उम्मीद,
मगर हम तो इंतज़ार किया करते हैं''

क्या आनंद है इस प्रतीक्षा रूपी आनंद का! विरह में रहना विरहन बहुत पसंद करती है। वियोग में, विरह में, प्रतीक्षा में विरहन को सर्वत्र राम दिखाई देते हैं। मौज है प्रतीक्षा में। सारी की सारी वृत्तियाँ राम जी पर केंद्रित हैं, रामाकार हो गई हुई हैं। हर पल, हर क्षण, हर रोज, हर सप्ताह, हर माह, हर वर्ष प्रतीक्षा में व्यतीत हो रहा है। आज आएँगे ? अभी आएँगे ? दोपहर तक आएँगे? शाम तक आएँगे? वाह प्रतीक्षा! तू कमाल की चीज है। शबरी तैयार रहती है। अभी आ गए तो! इसलिए अपने–आप को स्वच्छ रखती है, वातावरण को स्वच्छ रखती है, कुटिया को स्वच्छ रखती है, अपने विचारों को स्वच्छ रखती है मानो अपने इर्द–गिर्द राम रूपी स्वच्छता का वातावरण बनाया हुआ है। उसका भीतर भी स्वच्छ और बाहर भी स्वच्छ ही स्वच्छ।

आज आ गए हैं राम! ■

The strength one gets from Ram Nam is immeasurable & is adequate to transcend all pains and painful events. Fortunately, you have it.

All love and Jai Jai Ram.

जीवन की सभी पीड़ाओं और दुख देने वाली घटनाओं का पार पाने के लिए जो हिम्मत राम नाम से मिलती है वह असीमित है। भाग्य से वह है आपके पास।

सप्रेम जय जय राम।

Loving Jai Jai Ram

If you remain anchored to HIM – the sole source of Peace, strength & Bliss, you will undoubtedly remain blessed. He shall fulfil all your demands & keep you on righteous path. Keep HIS remembrance constant and you will remain linked to HIM. Face all odds of life wisely with sole dependence on HIM. Best wishes.

सप्रेम जय जय राम

यदि आपने स्वयं को उस परमात्मा से जोड़कर रखा है जो कि शांति, शक्ति और परमानन्द का एकमात्र स्त्रोत है तो आप निःसंदेह उसकी कृपा के पात्र होंगे। वह आपकी सभी जरूरतों को पूरा करेगा और आपको सत्य के मार्ग पर रखेगा। उसका निरंतर सिमरन कीजिए वह आपको स्वयं से युक्त रखेगा। जीवन की सभी कठिनाइयों का सामना विवेक से और एकमात्र उस पर निर्भर हो कर कीजिए। शुभकामनाएँ।

जन जन में हरि जोत है, विद्यमान सब ठौर।
भक्ति-हीन जाने नहीं, यों भटके सब ओर।।

(भक्ति प्रकाश, पृ 53)

'Prabhu Ram Ji and our Gurujans are watching over everyone'

I am a medical professional at a hospital in America. Through the last few months I have felt strongly that Prabhu Ram Ji and our Gurujans are watching over everyone and with their Kripa and Blessings and everyone's prayers all is well.

Covid-19 started hitting us in mid-March. Everyone was panicking. Number of cases started going up faster. We did not have enough information about the virus. The death toll was increasing day by day. Both young and adult patients were dying. I have seen more deaths in last 3 months than in my 26 years of nursing. It was heart breaking to see these people die. Families were not allowed to visit, even upon death they could not make a final visit to their loved ones.

All our patients in the critical care were on the ventilator. The hospital administration opened up more critical care beds. At one point we had 87 patients on ventilator. Each nurse had 4 patients. By the time we finished caring for one patient the next one was dying. Sometimes we did not know which patient to attend first since all of them were critically sick. Eventually we started getting help from army, navy and travelling nurses. Few of our colleagues got sick. They were not allowed to work for 14 days. As we were not prepared for this pandemic we ran out of PPEs. We got one N-95 mask for a week. Most of our patients were proned (put on their belly). Their oxygenation improves when they get proned. People from nearby communities were sending us food as a way of thanking us. We were emotionally drained. We felt bad for the families. Some patients did not have family members in the country. Medical staff was spending more time with these patients.

I cannot tell how many times I cried while taking care of these patients. We started using face time. That helped families see their loved ones even though patients were not awake. Family used to pray, sing and talk to patients on face time. In critical care not many patients were saved as they were very sick and on ventilator for so long.

Meanwhile, most of patients on the regular floor were getting better and leaving the hospital. When every patient left the hospital staff clapped their hands and played music. On May 19th we had celebrations of 1000 Covid patient discharged.

We still have around 20 patients on the ventilation. I am terrified with Covid and wish it will not happen again. We pray for sick and all departed souls. I spend lot of my time in my patients room. I was thinking I may get this one day and die. I was not scared of death; if I destined to die with this, I will die. No one can stop. We are not fully recovered but we will. First wave is almost over. I hope second will not come.

Now I am not wearing gown and gloves, only mask . No Covid patient in my unit. This is all due to our Gurujans Blessings. Prabhu Ram Ji and our Gurujans are with us at all times. I have very strong faith in our Gurujans. That faith is keeping me going. Their Blessings are powerful, their Presence is strong and will ensure that everything will be fine.

(A sadhika based in the US)

भक्ति करो भगवान की, तन्मय हो मन लाय।
श्रद्धा प्रेम उमंग से, भक्ति भाव में आय।।

(भक्ति प्रकाश, पृ 53)

Satsang Programmes During Lock-down

1,500 - 2,200	Average number of attendees in daily Satsang
9,000	Average number of attendees in Sunday Satsang
14,000	Average number of attendees in Sundarkand Paath
22,000	Peak number of attendees during Ramayan Paath
1,78,000	'Unique viewership'

Since the outbreak of the Covid-19 pandemic and the lock-down on 24 March 2020, with the Blessings of our Gurujans, Satsang programmes at Shree Ram Sharnam Delhi have continued without any interruption. All programmes are broadcast in their live timings. Participation by sadhaks has increased greatly through the use of digital technology.

The daily Satsang is broadcast every morning from 7 am to 8 am and the weekly Sunday Satsang from 9:00 am to 10:30 am. *Sundarkand Paath*, which takes places on the 2nd of every month is also broadcast live. Further, special programmes which had been planned to celebrate the Birth Centenary of Param Pujniya Prem Ji Maharaj in 2020 were also celebrated on 25-26 April, 23-24 May and 20-21 June. These consisted of continuous 24-hour recitation of Param Pujniya Swami Ji's *Valmiki Ramayana-Saar*. All programmes are broadcast from Shree Ram Sharnam headquarters in New Delhi via the official Shree Ram Sharnam Facebook page and YouTube channel.

Through these channels the daily Satsang was joined, on an average, by 1500 persons in April and 2200 persons in May. Sunday Satsangs were attended by more than 9000 sadhaks during both April and May. *Sundarkand* programmes have been attended by more than 14,000 sadhaks in April and more than 9,000 in May. *Ramayan-Ji Akhand Paath* recorded an attendance of 22,000 in April and more than 15,000 in May. These figures are only of those who have attended Satsangs through the official Facebook page and YouTube channel and do not include those who are attending via Whatsapp forwards.

The programmes have been attended by Sadhaks from across India and all over the world. 'Unique Viewership' in India has been around 178,000. In addition, there have been approximately 2,998 viewers from the USA, 500 from Nepal, 400 each from Canada and Australia, followed by other countries such as UAE, Singapore and the United Kingdom. Sadhaks based in overseas locations (where Satsangs follow a different schedule due to different time zones) have been attending their own regular weekly or monthly Satsangs through platforms like Zoom, besides enjoying participation in the Satsang programmes of Shree Ram Sharnam Delhi.

Satsang programmes are also being attended by those who have not subscribed to the official social media channels. Approximately 55 per cent of the total attendees are not subscribers.

(This data has been generated from Facebook and YouTube reports and was extracted on 27 May 2020). ■

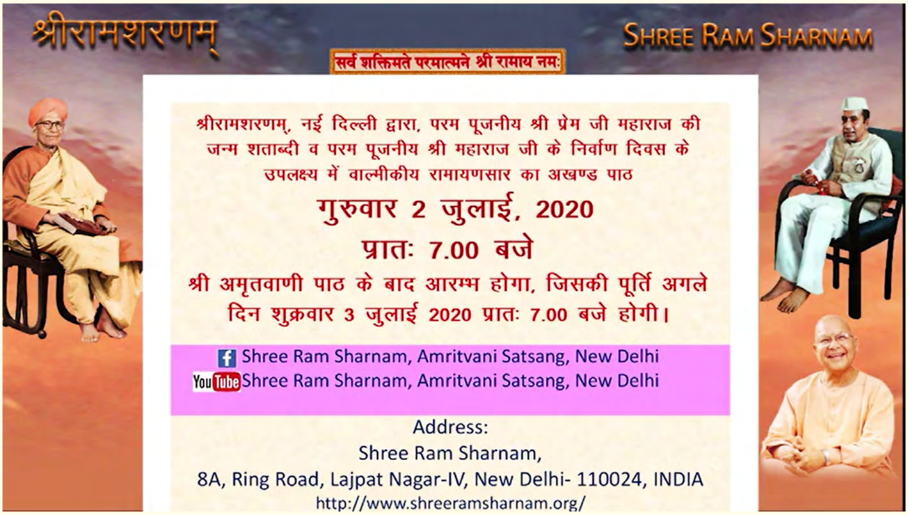

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

(मार्च 2020 से जून 2020)

- **दिल्ली** में 8 से 10 मार्च तक होली के उपलक्ष्य में खुला सत्संग सम्पन्न हुआ।
- **हरिद्वार** में 13 से 16 मार्च तक परम पूजनीय डा. विश्वामित्र जी महाराज के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग सम्पन्न हुआ।
- **उमरकोट**, झाबुआ में 18 मार्च को नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का उद्घाटन परम पूजनीय गुरुजनों की प्रेरणा से, उनकी सूक्ष्म उपस्थिति में भावपूर्वक सानंद सम्पन्न हुआ। इस पावन अवसर पर 3295 नवीन साधकों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **धारीवाल**, पंजाब में श्रीरामशरणम् भवन का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। कोविड–19 महामारी के पश्चात् हालात में सुधार होने पर श्रीरामशरणम् भवन के उद्घाटन की तारीख निश्चित की जाएगी।

विशेष प्रार्थना : जाप व श्री अमृतवाणी पाठ

कोविड–19 महामारी को मूल से हटाने के लिए देश विदेश के साधक परम प्रभु देवाधिदेव करुणा सागर, दयालु, कृपालु परमेश्वर के दरबार में प्रार्थना के रुप में श्री अमृतवाणी के पाठ और नाम–जाप कर रहे हैं। ये जाप व पाठ लॉक–डाऊन लगने के तुरन्त बाद से शुरु किए गए। अब्दुल्लागंज, अहमदाबाद, अमरपाटन, बिलासपुर, भोपाल, चण्डीगढ़, दिल्ली, फरीदाबाद, गोआ, ग्वालियर, गुड़गांव, होशियारपुर, होशंगाबाद, हरिद्वार, ईचलकरंजी, जबलपुर, कण्डाघाट, मनाली, मण्डी, सुन्दरनगर, मुम्बई, नागोद, नोयडा, रामतीर्थ, पटियाला, पुणे, पठानकोट, रतनगढ़, सरदारशहर, सतना, सिंगापुर व सूरत आदि केन्द्रों से लगातार जाप व पाठ की गिनती की सूचना आ रही है।

18 जून तक कुल जाप की संख्या पैंतालीस करोड़ से ज्यादा (45,77,78,000) और श्री अमृतवाणी पाठ की संख्या दस लाख से ज्यादा (10,38,720) हो गई है। यह पाठ और जाप अभी भी चल रहे हैं।

जो साधक इसमें अपना योगदान देना चाहते हैं, कृपया वे जाप व श्री अमृतवाणी पाठ की गिनती अपने स्थानीय प्रबन्धक के माध्यम से श्रीरामशरणम् दिल्ली भेज सकते हैं।

Naam Deeksha In Delhi (August to December 2020)

August	16	Sunday	10.30 AM
September	20	Sunday	10.30 AM
October	25	Sunday	10.30 AM
November	22	Sunday	11.00 AM
December	27	Monday	11.00 AM

Naam Diksha in other Centres (July to December 2020)

23	August	Sunday	Ratangarh, Rajasthan
30	August	Sunday	Jalandhar, Punjab
7	September	Monday	Obedullaganj, MP
27	September	Sunday	Jammu, J&K
4	October	Sunday	Rewari, Haryana
11	October	Sunday	Gurdaspur, Punjab
1	November	Sunday	Pathankot, Punjab,
1	November	Sunday	Banmore, MP
8	November	Sunday	Hisar, Haryana
22	November	Sunday	Fazalpur, Punjab
27, 28, 29	November	Friday, Saturday, Sunday	Gwalior, MP
3	December	Thursday	Alampur, HP
6	December	Sunday	Bhiwani, Haryana
20	December	Sunday	Surat, Gujarat
27	December	Sunday	Sujanpur, Punjab

Ramayan Paath In Delhi (July to October 2020) for Birth Centenary Celebrations

July	2	Thursday Online
August	22	Saturday
September	19	Saturday
October	2	Friday

Sadhna Satsang July to December 2020

Haridwar (Ramayani)	16 to 25 October	Friday to Sunday
Haridwar	11 to 14 November	Wednesday to Saturday
Gwalior	27 to 30 November	Friday to Monday

Open Satsang, August to December 2020

Rohtak	15 to 16 August	Saturday & Sunday
Ratangarh	22 to 23 August	Saturday & Sunday
Jammu	25 to 27 September	Friday to Sunday

On the Occasion of the Birth Centenary of Pujniya Shree Prem Ji Maharaj

Delhi	30 Sept. to 3 October	Wednesday to Saturday
Rewari	3 To 4 October	Saturday & Sunday
Gurdaspur	9 to 11 October	Friday to Sunday
Pathankot	31 Oct to 1 November	Saturday & Sunday
Hisar	7 to 8 November	Saturday & Sunday
Fazalpur	21 to 22 November	Saturday & Sunday
Alampur	03 December	Thursday
Bhiwani	5 to 6 December	Saturday & Sunday
Surat	19 to 20 December	Saturday & Sunday
Sujanpur	25 to 27 December	Friday to Sunday

Purnima, July to December 2020

July (Vyas Purnima)	5	Sunday
August	3	Monday
September	2	Wednesday
October	1	Thursday
October	31	Saturday
November	30	Monday
December	30	Wednesday

These programmes are subject to conditions then prevailing due to Covid-19 situation.

अवतरण शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में कार्यक्रम

परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष का शुभारम्भ 2 अक्तूबर 2019 से हो गया है।

वर्ष भर इसे पूर्ण उत्साह और उमंग के साथ अधिक से अधिक साधना करते हुए मनाए जाने का संकल्प कई श्री रामशरणम् केन्द्रों द्वारा लिया गया है।

श्रीरामशरणम् दिल्ली में पूरे वर्ष, हर महीने होने वाले श्री रामायण जी के अखण्ड पाठ का कैलेण्डर (जो श्रीरामशरणम् की website पर है) तैयार किया गया है। इसके अनुरुप अन्य केन्द्रों पर भी स्थानीय परिस्थितियों को देखते हुए, हर महीने श्री स्वामी जी महाराज के सद्ग्रन्थों के पाठ, अखण्ड जाप और सवा करोड़ के जाप का विशेष आयोजन रखा जा रहा है।

व्यक्तिगत रुप से कई साधक इस पुण्य पर्व के अवसर पर विशेष साधना कर रहे हैं जैसे सवा करोड़ नाम जाप, आहार–विहार, ध्यान, जाप, स्वाध्याय आदि।

हम सब के लिए अवतरण शताब्दी वर्ष एक सुनहरा अवसर है साधना के पथ पर आगे बढ़ने के लिए।

Six facts you should know about Guru Purnima

1. Did you know that Guru Purnima is also know as Vyas Purnima and is celebrated to mark the birthday of the Saint Ved Vyas?
2. Ved Vyas was not his real name. He got this name after he compiled the Vedas.
3. Scholars believe that he lived sometime between 1800 and 1500 BC.
4. Saint Vyas was a prolific author. Amongst the books he wrote are the *Vedanta Sutras*/ *Brahmasutras*, the 18 *Puranas*, 18 *Upa-Puranas* and the *Mahabharata*.
5. For us in Shree Ram Sharnam, this day is special because it was on Vyas Purmima in 1925 that Pujniya Swami Ji Maharaj received Darshan of the Almighty Shree Ram and was blessed with an 'inner vision' of Ram Naam.
6. We celebrate this day at all centres of Shree Ram Sharnam with Pushpanjali and Special Satsangs. A Sadhna Satsang is held at Haridwar to mark this day. You can also participate in this Sadhna Satsang when you grow up.

Family

What do you think is a family?

Who all are in your family?

Is it only those who live in your house like your mamma, papa, dadi dada, nani nana, brother, sister? Or those related to you like your uncles, aunts, cousins?

Or does your family also run into the millions and extend to all creation?

Do you know that Sri Krishna had told a secret to the warrior Arjuna in Gita Ji. This is the secret that makes us all one big family, makes us all brothers and sisters. Sri Krishna told Arjuna that it is He who lives in all His Creations as the Spirit, that we all come from Him and go back to Him. Does that not make us all one family?

Now see the video in which Pujniya Maharaj Ji talks about Family and tells us that we are all part of His Family.

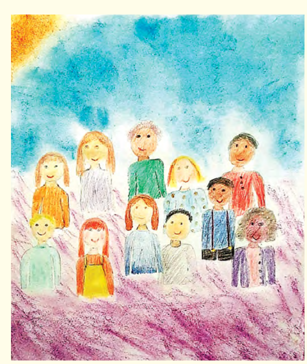

Dear Children,

You are invited to colour the picture which is in the link below and submit it by 15 September 2020. The best four pictures will be published in the October issue of *Satya Sahitya*. Please note the following:

1. Please do not write your name on the picture. Please write your name and address at the back of the picture. No names will be published.
2. Please note that pictures will not be returned and all entries will be reviewed.
3. Please either WhatsApp your colored picture to either of the following phone numbers 91-8360781858 OR 91–9582215824. You could also post it to Shree Ram Sharnam, 8A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024, India.
4. If sending by WhatsApp, please take a photograph of your picture without flash and in proper lighting, so that the picture quality is good.

We look forward to receiving your colourings.

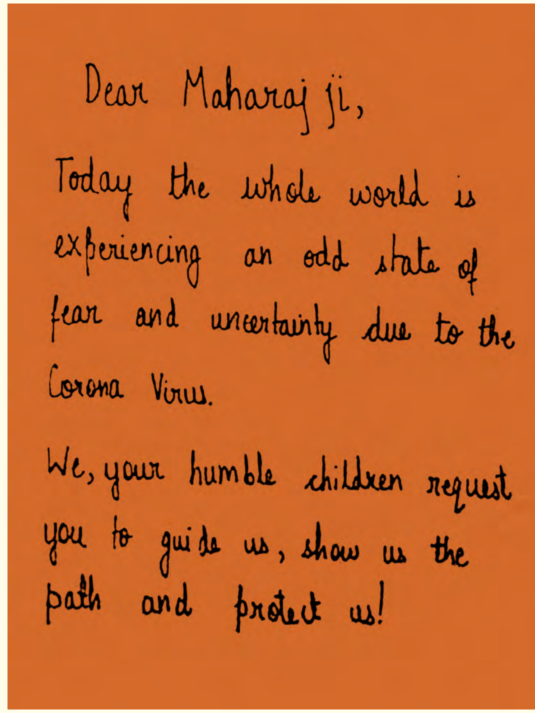
Dear Maharaj ji,

Today the whole world is experiencing an odd state of fear and uncertainty due to the Corona Virus.

We, your humble children request you to guide us, show us the path and protect us!

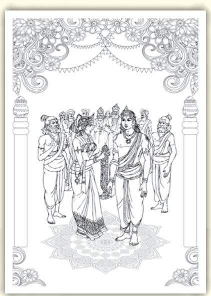

Download Images for colouring - click on the given link below

Image 1 - http://www.ibiblio.org/ram/satya_sahitya/Rama1.jpg
Image 2 - http://www.ibiblio.org/ram/satya_sahitya/Rama2.jpg
Image 3 - http://www.ibiblio.org/ram/satya_sahitya/Rama3.jpg
Image 4 - http://www.ibiblio.org/ram/satya_sahitya/Rama4.jpg

भक्ति बीच भगवान् है,
भक्तों बीच भगवान्।
भक्ति भाव में रहे हरि,
यही भक्ति का ज्ञान।।

(भक्ति प्रकाश, पृ 53)

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, ए–27, नारायणा औद्यौगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, A-27, Naraina Industrial Area, Phase 2, New Delhi 110028. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली
ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924